डॉ. बिभा कुमारी

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बादल राग : छह कविता का प्रतिपाद्य

निराला छायावाद युग के प्रमुख चार स्तंभों में से एक हैं। छायावाद की कविताओं में प्रकृति, दर्शन, प्रेम के साथ – साथ स्वाधीनता आंदोलन भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। कवि निराला मानते हैं कि कवि प्रहरी की भूमिका में रहना चाहिए। उन्होंने एक सजग प्रहरी की भूमिका निभाई है और निरंतर साहित्य – साधना में लीन रहे हैं। सामाजिक विषमता को दूर करने एवं समता की स्थापना करने के लिए वे सदैव प्रतिबद्ध रहे। स्वयं जागरूक रहकर, साहित्य – सृजन के माध्यम से सम्पूर्ण समाज को जागरूक बनाने हेतु प्रयत्न करते रहे। उन्होंने भारत की स्वाधीनता के लिए समाज के उपेक्षित समूह, पिछड़ों, दलितों, शोषितों और स्त्रियों की स्वाधीनता को अनिवार्य माना है। निराला के साहित्य की एक विशेषता यह भी है कि छायावादी कवि होने के साथ – साथ ये प्रगतिवादी कवि भी हैं। उनके साहित्य में अनेक स्थानों पर शोषितों की पीड़ा का सजीव चित्रण हुआ है। कवि निराला ने परिधि पर उपेक्षित छोड़ दिए गए लोगों को मुख्यधारा में शामिल करने का बीड़ा उठाया और जीवनपर्यंत इस दिशा में कार्य करते रहे। इनके सम्पूर्ण साहित्य में शोषित – पीड़ित लोगों की पीड़ा का जीवंत चित्रण दिखाई देता है, कवि उंस सम्पूर्ण व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं, जहाँ एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का शोषण किया जाता है। बादल राग कविता दो भागों में है, कविता का दूसरा भाग है – 'बादल राग छह'।

कविता का प्रथम भाग प्रकृति प्रेम से ओतप्रोत है जिसमें बादल के सुंदर – कोमल रूप का वर्णन है। छायावादी कविता में जिस प्रकार प्रकृति – चित्रण की कविताएं लिखी गई हैं, ठीक वैसा ही चित्रण बादल राग के प्रथम भाग में हुआ है। कविता के दूसरे भाग में प्रगतिवादी प्रवृत्ति स्पष्ट रूप में दिखाई दे रही है, वहाँ बादल विप्लव का रूप लेकर, क्रांति का प्रतीक बनकर आया है। कवि क्रांति के लिए बादल का आह्वान करते हैं। बादल एक ओर कृषकों के जीवन का आधार है तो दूसरी ओर कृषकों – श्रमिकों, शोषितों – उपेक्षितों द्वारा की जाने वाली क्रांति का प्रतीक है। उनका छायावादी प्रकृति प्रेम और प्रगतिवादी चेतना दोनों भाव 'बादल – राग' कविता में एक साथ आए हैं।

छायावादी युग के प्रभावस्वरूप उन्होंने स्वाभाविक रूप से प्रकृति चित्रण किया है। अपनी अनेक रचनाओं में उन्होंने प्रकृति के प्रत्येक अवयव, प्रकृति के प्रत्येक कार्य – कलाप, सूक्ष्म से सूक्ष्म गतिविधि का उन्होंने सजीव चित्रण किया है। प्रकृति के साथ वे अपना भावात्मक तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। प्रकृति के सौन्दर्य का चित्रण करने के साथ – उन्होंने प्रगतिवादी चेतना को भी प्रकृति के माध्यम से स्वर देते हैं अतः बादल को विप्लव क्रांति का वीर मानते हैं और कृषकों की सहायता के लिए उसका आह्वान करते हैं –

"जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर

तुझे बुलाता कृषक अधीर

ऐ विप्लव के वीर।"

निराला समाज के उपेक्षित समूह, शोषित जनता और दलित वर्ग के प्रति विशेष सद्भाव रखते हैं, इनके दुखों को दूर करने के लिए वे पूर्णतः प्रतिबध्द हैं।

निराला देश और समाज की दुर्दशा के लिए सामंतों, पूंजीपतियों, जमींदारों और अमीर सेठों को जिम्मेदार मानते हैं। इन लोगों ने अपनी तिजोरियों में इतना भर लिया है कि शेष जनता के लिए कुछ बच ही नहीं पाया। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने शोषकों का विरोध किया है। उन्होंने काव्य के भाव पक्ष को जितना समृद्ध किया है उतना ही शिल्प पक्ष को भी किया है। उन्होंने भाव पक्ष में नए प्रयोग करते हुए अनेक नए विषय शामिल किए तो दूसरी तरफ भाषा, छंद, शैली में भी नए – नए प्रयोग किए। उन्होंने उपमा, रूपक, मानवीकरण इत्यादि अलंकारों का प्रयोग किया। प्रतीक भी ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, आधुनिक हर प्रकार के प्रयोग किए। उन्होंने मुक्त छंद कविताएँ लिखीं और कहा –

"मनुष्य की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होनी चाहिए।"

उनका सम्पूर्ण साहित्य सच्ची मानवीय दृष्टि की सशक्त एवं सफल अभिव्यक्ति है। अतः 'बादल राग' कविता में भी वे कृषकों की आशा और क्रांति के आह्वान को स्वर देते हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से निराला सदैव सामाजिक उत्थान के लिए तत्पर रहे हैं। सम्पूर्ण मानव प्रजाति की हर प्रकार से मुक्ति हो सके, सभी प्रगति कर सकें ऐसी भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हुए वे नवजागृति का आह्वान करते हैं। -

"जीर्ण – बाहु है, शीर्ण शरीर,

तुझे बुलाता कृषक अधीर,

ऐ विप्लव के वीर!"